वर्ष-3 अंक : 28

सहयोग शुल्क : रु.1 | अप्रैल : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

GUINNESS WORLD RECORDS

एक सफल व्यक्ति बनने की कोशिश मत करें, बल्कि मूल्यों पर चलने वाले व्यक्ति बने |

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है,
और असफलता दुनिया का परिचय हमसे करवाती है |

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

बेचता यूँ ही नहीं है आदमी ईमान को,
भूख ले जाती है ऐसे मोड़ पर इंसान को ।
सब्र की इक हद भी होती है तवज्जो दीजिए,
गर्म रक्खें कब तलक नारों से दस्तरख़्वान को ।
शबनमी होंठों की गर्मी दे न पाएगी सुकून,
पेट के भूगोल में उलझे हुए इंसान को ।
पार कर पाएगी ये कहना मुकम्मल भूल है,
इस अहद की सभ्यता नफ़रत के रेगिस्तान को ।

- अदम गोंडवी

किसी ने उगता हुआ सूरज देखा । किसी ने बरसात का सूरज देखा । किसी ने अमेरिका में बैठकर देखा । किसी ने अफ्रीका में बैठकर देखा । और सबने देखा सूरज लेकिन आधा-तिरछा देखा या किसी माध्यम से देखा ।अब जो देखने वाले थे, वो चले गए । जिन्होंने देखा था, वो चले गये । उनकी लिखी किताबें बची हैं । किताबों में ज़िक्र किसका है- 'सूरज का और चश्मे का' । सूरज तो पढ़ने वाले जान नहीं पाते क्योंकि सूरज तो बताने की चीज़ नहीं है । सूरज तो अनुभव करने की चीज है । सूरज तो जान नहीं पाते । हाँ, चश्मे को जान जाते हैं ।

-धन्यवाद। आपके सदैव ऋणी रहेंगे।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अप्रैल : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 03 अंक : 28

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

079 26405200

दिव्यांग बच्चो के लिए व्यावहारिक जीवन का अनुभव....

कुछ महान और अद्वितीय हाँसिल करने के लिए, हमें कुछ बडा और नया करने के लिए एक उत्कृष्ट प्रयास करना होगा। यह आदर्श वाक्य के साथ औरा की टीम को प्रेरित किया जाता है।

पिछले दो महीने में हम अपने छात्रो को किराने की दुकान, खिलौने की दुकान, बेकरी, स्टेशनरी की दूकान और बहुत कुछ जैसे विभिन्न स्थानों पर एक फील्ड ट्रिप पर ले जाने की पहल की है।

यह छात्रो को एक नए स्तर पर व्यावहारिकता सिखने के संबंध में किया गया प्रयास है।

हाल ही में हम उन्हें एक फायर स्टेशन, ट्रैफिक सिग्नल और एक वाणिज्यिक बैंक में ले गए, हमारे छात्रो ने इस संक्षिप्त सत्र मैं जो जानकारी अवशोषित की है वह उल्लेखनीय है, युवा दिमाग को शिक्षित करते हुए कुछ प्रयास करना हंमेशा एक अच्छा विचार है।

स्पेशल बच्चों के स्पेशल शिक्षकोंने क्रिकेठ एवं बोसी जैसे खेल का आनंद लिया...

मानसिक दिव्यांग बच्चो और कार्यकर्ता स्पेशल शिक्षको के लिए क्रिकेट एवं बोसी की खेल प्रतियोगिता का आयोजन गुजरात विद्यापीठ में हुआ। प्रतियोगिता में येलो, ग्रीन एवं व्हाइट जैसी टीमों ने भाग लिया था। जिसमे से येलो एवं ग्रीन टीम क्रिकेट प्रतियोगिता की फ़ाइनल में खेली थी और येलो टीम विजेता घोषित हुई थी। इसी तरह व्हाइट एवं ग्रीन टीम बोसी की फ़ाइनल में खेली थी और व्हाइट टीम विजेता बनी थी। विजेताओं को सोसायटी ऑफ़ मेन्टली रिटार्डेड की तरफ से शील्ड अर्पण किए गए। भोजनदाता, टी-शर्ट दाता, आइसक्रीम दाता सभी की तरफ आभार प्रगट करते कार्यक्रम के संचालक निलेष पंचाल ने बताया कि पूरे साल मानसिक दिव्यांग बच्चो के लिए अलग अलग कार्यक्रम में परिश्रम करने वाले शिक्षको को ये २ दिन खुद के लिए आनंद करने को मिलता है। इस कार्यक्रम में ९६ शिक्षको ने हिस्सा लिया था। इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है जिसमे पूरे गुजरात से शिक्षक भाई-बहन हिस्सा लेते है।

कार्यक्रम के अंत में प्रख्यात शिक्षक भावना पंड्या और प्रख्यात थेरापिस्ट सुभाष आप्टे द्वारा शील्ड वितरण किया गया। शिक्षकों को प्रेरणा मिल सके ये हेतुसर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

नाटक, गरबा, बोलीवुड डान्स, व्यसनमुक्ति थीम, रक्तचरित्र थीम जैसे विभिन्न विषयों पर दिव्यांग बच्चों का कौशल्य प्रदर्शन

सो सायटी ऑफ़ मेन्टली रिटार्डेड द्वारा मानसिक दिव्यांग बच्चो के लिए टागोर हॉल मैं डान्स स्पर्धा का आयोजन किया गया था। इसमें शहर की ३० जितनी शालाओं के ६०० बच्चोने एवं ५० जितने शिक्षकों ने हिस्सा लिया था। प्रतियोगिता दो ग्रुप मैं आयोजित हुई थी जिसमे प्रथम जुथमें १८ साल से छोटे बच्चोने एवं उनके शिक्षकोने हिस्सा लिया था।

नाटक, गरबा, बोलीवुड डान्स, व्यसनमुक्ति थीम, रक्तचरित्र थीम, धार्मिक डान्स जैसी अलग अलग प्रस्तुति हुई थी। ये प्रतियोगिता में नीचे वाली टीम विजेता साबित हुई थी।

मानसिक दिव्यांग-अ-जुथ

१. नवजीवन
२. अंधजन मंडल
३. न्यू वे
४. सोपान
५. हेल्थ एंड केयर

शिक्षक-क-ग्रुप

१. उत्थान
२. न्यू वे

दूसरें जुथमें १८ साल से बड़े दिव्यांग बच्चोने अपनी प्रस्तुति पेश की थी। जिसमे शिव तांडव, चारधाम थीम, बेटी बचावो, स्वच्छता थीम जैसी थीम प्रस्तुत हुई थी। इसके साथ साथ अवोर्ड फंक्शन भी हुए थे जिसमे नीचे दिए गए टीमों को पुरस्कार दिया गया था।

मानसिक दिव्यांग-ब-ग्रुप

१. उत्थान
२. उमंग
३. बी एम्
४. ब्लू रोज़
५. आस्था

अवॉर्ड ग्रुप

१. सर्वश्रेष्ठ शिक्षक - श्री निमेष अध्यारू
२. श्रेष्ठ संचालक - डॉ. भारत भगत
३. श्रेष्ठ केयर टेकर - श्री विष्णु रबारी
४. श्रेष्ठ सेवा सहायक - श्री मुकेश गोस्वामी
५. श्रेष्ठ लेखन स्पर्धक - श्री कृतिका प्रजापति

जज के तौर पर संगीताबहेन एवं विभुतिबहेन ने सेवा प्रदान की थी। मुख्य अतिथि के तौर पर USA स्थित जय पटेल, चम्पाबहेन पटेल एवं कमलाबहेन पटेल उपस्थित रहे थे।

---

४९ साल के दिव्यांग ली स्पेन्सरने एटलान्टिक समुद्र पार करके विश्वरिकार्ड कायम किया.

ब्रिटिश नौकादल रॉयल मरीन के निवृत सिपाही ली स्पेन्सर (आयु ४९ साल) ने अपने दिव्यांग होने के बावजूद सबसे तेज़ एटलान्टिक समुद्र पार करने का विश्वरेकोर्ड अपने नाम कर लिया है। खुद दिव्यांग होने के बावजूद उन्होंने ये सिद्धि हासिल की है। पतवार वाली नाव के जरिये उन्होंने यूरोप से लेके साऊथ अमेरिका तक का सफ़र ६० दिनों में तय करके ये मुकाम प्राप्त किया। इस दरमियान उन्होंने करीबन ५६०० कि.मी. की मुसाफ़री तय की। उन्होंने पुराने वाले रिकार्ड से ३६ दिन पहले अपनी मुसाफ़री पूर्ण करके ये रेकोर्ड अपने नाम किया। सफ़र के दरमियान उनको ४० फिट ऊँची समुद्र की लहरों का सामना करना पड़ा।

वह एक खंड से दूसरे खंड तक पतवार वाली नाव के सहारे पहुँचने वाले प्रथम दिव्यांग व्यक्ति बन गए है। पूरे दिन में वह मात्र २ घंटे सोते थे। साल २०१४ में एक दुर्घटना के बाद बाएँ पैर का घुटने के नीचे हिस्सा काटना पड़ा था। रॉयल मरीन चेरिटी के लिए पूंजी एकत्रित करने हेतुसर किया गए ये चेलेन्ज दरमियान उन्होंने करीब ५० लाख से ज्यादा का फंड एकत्रित किया।

स्पेशियल ओलम्पिक वर्ल्ड समर गेम्स-२०१९

अबुधाबी में गुजरात की साक्षी मिस्त्रीने सायकलिंग में भारत का प्रतिनिधित्व किया

स्पेशियल ओलम्पिक द्वारा अबुधाबीमें १४ से २१ मार्च दरमियान वर्ल्ड समर गेम्स-२०१९ का आयोजन किया गया था। भारत द्वारा आयोजित अलग-अलग खेल के नेशनल चेम्पियनशिप में से गुजरात से १६ खिलाडीयों एवं ५ कोच का चयन वर्ल्ड समर गेम्स के लिए हुआ था।

गुजरात में से अहमदाबाद के धोलका में आये स्थित न्यू वे एज्युकेशनल एंड रूरल डेवलोपमेंट ट्रस्ट द्वारा संचालित फ्रीडम डे केयर की विद्यार्थिनी - युवा खिलाडी साक्षी मिस्त्री का चयन सायकलिंग के लिए हुआ था जो की धोलका एवं समग्र अहमदाबाद जिले के लिए काफ़ी गौरव की बात है। संस्था के स्टाफमें कार्यरत हेमलताबहेन मकवाणा, नसरीनबहेन ख्लिफा, जल्पाबहेन परमार एवं संस्था के साथ जुड़े हुए मुकुंदभाई, अतुलभाई (साईं ग्रुप), मुकेशभाई (जयमाडी ग्रुप) द्वारा साक्षी को शुभेच्छा दी गई थी। वर्ल्ड समर गेम्स-२०१९ अबुधाबी में हिस्सा लेने जानेवाले गुजरात के तमाम खिलाडियों का सम्मान समारोह अहमदाबाद में हुआ था। जिसमे साक्षी के पिता श्री योगेशभाई मिस्त्री, माता श्री रेखाबहेन मिस्त्री, स्पेशियल ओलम्पिक गुजरात ऑफिस की समग्र टीम, किरीटभाई चौहान एवं संस्था के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री भाविन परमार ने उपस्थित रहकर खिलाडी साक्षी मिस्त्री द्वारा की गई नियमित प्रेक्टिस एवं मेहनत की सराहना की थी।

होली के रंग दिव्यांग बच्चों के संग

अहमदाबाद के नवा वाडज में स्थित स्मित एज्युकेशन एंड डेवलोपमेंट ट्रस्ट संचालित शाला के ६० जितने दिव्यांग बच्चो ने लायन्स क्लब ऑफ़ वस्त्रापुर द्वारा कक्कड़ फ़ार्म में आयोजित धुलेटी के कार्यक्रममें हिस्सा लिया था। कार्यक्रम में DJ के साथ बच्चोने काफी आनंद व्यक्त किया था। मुख्य अतिथि के रूपमें श्री बंकिम पाठकने उपस्थित रहकर बच्चो को खूब आनंद कराया था। इसके अलावा लगभग १५० एनी दिव्यांग व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे थे।

प्रधानमंत्री मोदी की पहल, नेत्रहीनों के लिए विशिष्ट सिक्के जारी किए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सरकार दिव्यांग हितैषीज् की पहल को लेकर बहुत संवेदनशील है। जन-औषधि दिवस के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में पीएम मोदी ने खासतौर पर नेत्रहीनों के लिए बनाए गए सिक्के जारी किए। कार्यक्रम में इन सिक्कों के जारी करने के मौके पर नेत्रहीन बच्चों को भी आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम में उनके साथ वित्त मंत्री अरुण जेटली भी मौजूद थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि विभिन्न विशेषताओं के साथ नए सिक्के दृष्टिबाधितों के लिए बहुत मददगार होंगे और एक आधिकारिक रिलीज में कहा गया है कि दृष्टिबाधितों के लिए और अधिक आसान बनाने के लिए सिक्कों की नई सीरीज में विभिन्न नई विशेषताओं को शामिल किया गया है। २० रुपये के नए सिक्के में १२ कोण हैं। बाकी सिक्कों का आकार गोल हैं। नेत्रहीनों के लिए बनाए गए इन सिक्कों की इस तरह डिजाइन किया गया है, जिससे नेत्रहीन आसानी से इनकी पहचान कर सकते हैं। कीमत के लिहाज से हर सिक्के का वजन और साइज़ डिजाइन किया गया है। सिक्कों को अलग-अलग मूल्यवर्ग में उपलब्ध कराया जाएगा। इनमें १ रुपये, २ रुपये, ५ रुपये, १० रुपये और २० रुपये के सिक्के शामिल हैं। गौर करने वाली बात है कि पीएम ने जन-औषधि दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में देशभर के जन-औषधि केंद्र संचालकों से वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के जरिए बात की। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने २० रुपये का सिक्का जारी करने की घोषणा की है, जो १२ किनारे वाले बहुभुज आकार वाला होगा। इसका बाहरी व्यास २७ मिलीमीटर होगा और वजन ८.५४ ग्राम होगा। वित्त मंत्रालय की ओर से जारी नोटिफिकेशन में यह जानकारी दी गई है। नए सिक्के में बाहरी रिंग पर ६५ फीसदी हिस्सा तांबा, १५ फीसदी हिस्सा जिंक और २० फीसदी निकेल होगा और आंतरिक रिंग में ७५ फीसदी हिस्सा तांबा, २० फीसदी जिंक और ५ फीसदी निकेल होगा।

२० रुपये के नए सिक्के में १२ कोण हैं। बाकी सिक्कों का आकार गोल हैं।

प्रस्तुत लोकसभा चुनावमें दिव्यांग मतदाता भी अपना कर्तव्य निभाएँगे

आम चुनाव यानी 17 वीं लोकसभा चुनाव दिव्यांगों के लिए खास है। दिव्यांग मतदाता जब अपने-अपने क्षेत्र के मतदान केंद्र पर अपना मताधिकार का प्रयोग करने जाएंगे उन्हें पहली बार कुछ अलग तरह का अहसास होगा। उन्हें किसी तरह की समस्या का सामना न करने पड़े इसे ध्यान में रखते हुए भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देश पर विशेष व्यवस्था रहेगी।

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (डीआरडीए) धनबाद के सभागार में अनुमंडल पदाधिकारी राज महेश्वरम ने सोमवार को दिव्यांग मतदाताओं को सुविधाओं की जानकारी दी। अनुमंडल पदाधिकारी ने बताया कि चुनाव आयोग के निर्देश पर दिव्यांग मतदाताओं की मदद के लिए पहली बार दिव्यांग दूत तैनात होंगे। वे दिव्यागों को बूथ तक ले जाएंगे। चलने-फिरने में असमर्थ दिव्यागों को ह्वील चेयर पर बिठाकर बूथ तक ले जाया जाएगा।

ये सुविधाएं दी जाएंगी : दिव्याग मतदाताओं के लिए रैंप, ह्वील चेयर, वॉकिंग स्टिक, विशेष बैठक व्यवस्था, सुगम ईवीएम काउंटर, ब्रेल लिपि में छपी मतदाता पर्ची, फर्स्ट एड, शौचालय और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था पोलिंग बूथ पर की जाएगी।

वीआइपी की तरह नाम की होगी फ्लैगिंग : वोटर लिस्ट में विशिष्ट व्यक्तियों की तरह दिव्याग के नाम को फ्लैगिंग किया जाएगा। ऐसा होने से दिव्याग मतदाताओं की पहचान आसानी से की जा सकेगी। अनुमंडल पदाधिकारी ने बताया कि दिव्याग मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए होली के बाद क्रिकेट, शॉट पुट, व्हील चेयर रेस इत्यादि का भी आयोजन किया जाएगा। इस अभियान में दिव्याग मतदाताओं को पोलिंग बूथ पर मिलने वाली सुविधाओं का प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

एक मुलाकात निर्मलाबेन रावल से

अपनी जीवनयात्रा में हम विरले ही ऐसे व्यक्तित्वों के संपर्क में आते है, जिन्हें देखकर स्वत: ही हमारा सिर श्रद्धा से उनके सामने झुक जाता है। उनके रुतबे, पैसे या उम्र की वजह से नहीं, वरन उनके द्वारा किए जा रहे उत्तम कार्यो की वजह से। ऐसे ही गरिमामय व्यक्तित्व की धनी एक महिला निर्मलाबेन रावल से आज मैं आपका परिचय कराने जा रहे हैं।

पिछले चालीस वर्षो से दिव्यांग कल्याण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में नि:स्वार्थ रूप से कार्यरत निर्मलाबहेन, जिन्हें बच्चे प्यार से 'नीरू दीदी' कहते है, को ४० से भी अधिक राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके है। उनके द्वारा दिव्यांग कन्याओं के लिए सन १९९९ में शुरू की गई संस्था 'मंथन' मानवता एवं नारी विकास की दिशा में एक अग्रणी संस्था बन चुकी है। अभी पिछले महीने ही इस संस्था में जाने का एवं निरुबेन, मुलाक़ात करने का अवसर मिला। निरुबेन से हुई बातचीत के कुछ अंश।

मेरे यह पूछे जाने पर के 'मंथन' की स्थापना, उसके जन्म की कल्पना आपने कब और किन परिस्थितिओ में की? तो निरुबेनने बताया, मेरे जीवन में घटी एक विदारक घटना से मंथन का जन्म हुआ। पहले में नानी कड़ी गाँव में लडको के लिए एक संस्था चलाती थी। वहां एक भाई अपनी घिसटती हुई अपंग बेटी को छोड़ने आए। उन्हें किसी परिचित ने ही भेजा था। उस भाई ने कहा, मेरी बेटी ७ वीं कक्षा तक तो गाँव में पढ़ी है, पर अब ८ वि कक्षा से गाँव में स्कूल नहीं है। यह छोटी थी तो मैं इसे गोद में उठा के स्कूल छोड़ आता था पर यह बड़ी हो गई है और में इतना साधन-संपन्न नहीं की बस या गाड़ी से स्कूल भेज सकूँ इसलिए इसे आपके यहाँ छोड़ना चाहता हूँ। मैंने कहा हम लडकियों को नहीं रखते। उसके कारण पूछने पर मैंने बताया की यहाँ इतनी सुविधाए नहीं है। लडको के साथ तो थोड़ी सुविधाए कम हो तो भी चल जाता है पर लडकियों के साथ नहीं और मैं तो यहाँ नौकरी करती हूँ। इस लड़की को रोज यहाँ अकेले कैसे छोड़ कर जाउंगी? उन भाईने फिर भी जोर दिया की बेन रख लीजिए ना, इसकी माँ नहीं है तो मैं घर का काम करूँ, नौकरी करूँ या इसे पालूँ? मैंने उन्हें समझाया की सिर्फ स्नेह या प्रेम के वश होकर मैं आपकी बेटी को नहीं रख सकती। निराश होकर वो मेरे परिचित के पास गए और कहा कि निरुबेन ने मेरी बेटी को रखने से मन कर दिया। तब मेरे परिचित ने उनके साथ मेरे लिए एक चिट्ठी भेजी, जिसमे दो ही वाक्य लिखे थे (१) ऐसा काम कर रहे हो तो किसीको इंकार मत करो और दूसरा जो बहुत ही मर्मपूर्ण वाक्य था कि (२) यदि तुम्हारे यहाँ नहीं रख सकते तो कही और प्रयत्न किया क्या? उनके कहने का तात्पर्य था की तुमने मना तो कर दिया पर कोई मार्गदर्शन भी नहीं दिया, उसकी मदद कहाँ हुई? तब मुझे अपनी गलती का एहसाह हुआ और अगले दिन ही मैं उनको लेकर एक संस्था मैं गई। वहाँ मेरे सब बताने पर की, यह एक अपंग लड़की है, पढने मैं होशियार है और इसको आपकी संस्था मैं प्रवेश चाहिए, वहाँ से जवाब मिला की १७० की वेटिंग लिस्ट है उसका १७१ व नंबर रहेगा। मेरे कहने पर इस लड़की की माँ नहीं है, पिता छोटे गाँव में रहते है जहाँ शिक्षा की सुविधा नहीं है तो आप कृपया रख लीजिए, उन्होंने साफ़ मना कर दिया की और यह जानकर की मैं लडको के लिए संस्था चलाती हूँ, मुझे कहा की बेन थोड़ी ज्यादा भीख मांगकर लडकियों को भी रखना शुरू कर दो। यह सुनकर इस लड़की के पिता क्रोधित हो उठे। मेरी बांह पकड़कर मुझे वहाँ से उठाते हुए बोले की आज मेरी बेटी की वजह से आपका अपमान हुआ है। ऐसा कहते हुए उन्होंने अपनी बेटी को एक थप्पड़ मारते हुए कहा की यह लंगड़ी मरती भी नहीं और इस कारण मेरी दूसरी शादी भी नहीं होती। इस घटना के बाद वो बाप-बेटी तो अपने घर लौट गए पर मेरी अंतरात्मा को अन्दर तक झकझोर गए। उस दिन के बाद मैं सतत सोचती रहती थी की इस तरह की लड़कियों की मैं किस प्रकार से मदद करू? फिर जैसे ऊपरवाले ने ही रह दिखाई। एक दिन हमारी संस्था में निरिक्षण के लिए। एक और मेरी पढ़ाई देखक्र मुझे बोले कि आप को तो शहर में बहुत अच्छी नौकरी मिल सकती है, वहाँ सुविधाए भी होती है तो आप यहाँ क्यूँ कार्य कर रही है? मैंने जवाब दिया की सेवा की असल जरुरत तो यहाँ गाँवों में ही है, जहाँ सुविधाए नहीं है। मुझे पैसा नहीं कमाना, पैसा तो मेरी माँ भी मेरे लिए छोड़ गई है पर मेरे जीवन का लक्ष्य सेवा करना है। मेरी माँ मेरे लिए लगभग १०० तोला सोना छोड़कर गई है पर देते वक्त उन्होंने कहा था की इसे पहनने के लिए बल्कि किसी अच्छे कार्य के लिए काम में ले। फिर उन अधिकारी के कहने पर यहाँ हाजीपुर गाँव में 'मंथन' की नींव राखी गई। तो आप यह कह सकते है की 'मंथन' का जन्म एक दिव्यांग बेटी की वेदना और समाज में उसके अस्तित्व की अस्वीकृति के कारण हुआ।

अपनी बातों के क्रम को आगे बढ़ाते हुए निरुबेन ने बताया, जब १९९९ में

'मंथन' की स्थापना हुई तब न यहाँ सड़के थी, ना ही पीने का पानी। कोई साधन न होने से पैदल ही पास के गाँव के कुए से पानी लाते थे। एक झाड के नीचे तम्बू बनाकर ग्यारह लडकियों के साथ इसकी शरुआत हुई। फिर तम्बू की जगह तीन मिटटी की झोंपडिया बनाई जिसमे बरसात में पानी भी बहुत टपकता था। जंगल जैसा ही था तो सांप-बिच्छु भी बहुत निकलते थे। कोबरा बहुत निकलते थे, तो कितनी बार तो ये होता था की झोंपड़ी के अन्दर कोबरा होता था और हम सब बाहर बैठकर उसके वहाँ से निकलने का इंतजार करते। धीरे-धीरे मिटटी के झोंपड़ो की जगह इंट के कमरे बनाए। एक ऊंटगाड़ी रखी जिसमे बैठाकर लडकियों को पास के गाँव के स्कुल में ले जाते थे।

'मंथन' की स्थापना के बाद विघ्न तो बहुत आए। 'दिव्यांगता' को 'माता का श्राप' समझने वाले गांववाले ने भी पहले तो गाँव के निकट ऐसी संस्था की स्थापना करने से बहुत विरोध किया। कोई सरकारी ग्रांट भी नहीं थी पर श्री गिरिशभाई पटेल जैसे अत्यंत सेवाभावी एवं निष्ठावान उद्योगपति के साथ जुड़ने से सारी विषमताओ पर विजय पाने में बहुत मदद मिल गई। धीरे-धीरे हमारे समझाने पर एवं नि:स्वार्थ किए जा रहे कार्यो को देखकर गांववालों के मन में भी विश्वास स्थापित हुआ।

मेरे पूछने पर की सांप-बिच्छु निकलते थे, पानी की तंगी थी, पैसो का भी अभाव था और कोई मदद भी नहीं आ रही थी तो आपने कभी हिम्मत नहीं हारी? निरुबेन ने बहुत ही सुन्दर जवाब दिया "जब ईश्वर को आपसे कुछ विशेष करवाना होता है तो डर अपने आप ही दूर चला जाता है और हिम्मत भी स्वत: ही मिलती जाती है। परिस्थितियाँ लाख विषम हो, राहें अपने आप ही खुलती जाती है।'

निरुबेन ने कहाँ, 'आज "मंथन" को २६ वां वर्ष पूरा ओने को आया है। मैं जब २४ की थी तब मंथन की नींव रखी गई थी। अब तो यहाँ से ३०० से अधिक मानसिक दिव्यांग, अनाथ, एवं दिव्यांग एवं आदिवासी लड़कियों रहकर शिक्षा ग्रहण कर रही है। इसी तरह पोलियो फाउन्डेशन की मदद से अनेक लडकियों का नि:शुल्क ओपरेशन भी यहाँ किया जाता है। यहाँ सब मेरा परिवार बन चुकी है और हम सब मिल-जुलकर सारे सुख-दु:ख बांटते है। शरुआत में तो झाड़ूवाली से लेकर रसोइयन और प्रिन्सिपाल तक भी मैं ही थी। अब तो यहाँ सब सुविधाए हो गई है, पैसो का भी अभाव उतना नहीं रहा। पर हाँ, हॉस्टल में कार्य करने के लिए स्वैच्छिक कार्यकर्ताओ का अभाव जरुर जरुर रहता है। शहर से दूर होने से ज्यादा प्रशिक्षित शिक्षक भी जल्दी से नहीं मिलते। पर अब यातायात सुविधाए बढ़ जाने से मुझे उम्मीद है कि यह कमी भी जल्द पूरी हो जाएगी।'

तो यह थी निरुबेन से हुई संक्षिप्त पर कभी न भूली जानेवाली मुलाकात। हमें गर्व है निरुबेन एवं उन्ही की तरह दिव्यांग सेवा को ही पूर्णरूपेण अपना जीवन समर्पित करनेवाले व्यक्तिओं पर जिन्होंने विषमताओ से भरी राहों को भी हसते हसते अपनाया एवं विजय प्राप्त करके दिखाई।

आज निरुबेन द्वारा वर्षो पहले मंथनरूपी बोया गया बीज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चूका है जिससे यह सिद्ध होता है की अपने लक्ष्य को पाने में प्रतिकूल परिस्थितियां भी जिसे राह से न डिगा सके, इश्वर को भी उसका साथ देना ही पड़ता है।

- ज्योति मोलासरिया धुप्पड

जब प्रधानमंत्री मोदीने मोहम्मद असीम का सपना साकार किया

हिंदुस्तान टाइम्स की खबर के अनुसार बिना हाथों के पैदा हुआ दिव्यांग मोहम्मद असीम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर सवा सौ करोड़ देशवासी पूरा भरोसा करते हैं और प्रधानमंत्री मोदी भी उनके भरोसे को बनाए रखने के लिए निरंतर काम करते हैं। मसला कोई भी हो, प्रधानमंत्री मोदी के ध्यान में आते ही वह त्वरित रूप से मदद के लिए आगे आते हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) से केरल के मोहम्मद असीम को एक बड़ी राहत मिली है। पीएमओ ने केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय को निर्देश दिया कि वह राज्य के शिक्षा विभाग से परामर्श करके कोझिकोड जिले के ओमसेरी पंचायत के स्कूल को हाई स्कूल में अपग्रेड करने के लिए कदम उठाए।

हिंदुस्तान टाइम्स की खबर के अनुसार बिना हाथों के पैदा हुआ दिव्यांग मोहम्मद असीम पिछले दो वर्षों से अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए लोगों से मदद के लिए संपर्क कर रहा था। असीम में मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन सहित कई नेताओं को अपने पैरों से पत्र लिखे थे। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी से भी मुलाकात की। सभी ने मदद करने का वादा किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। सारी कोशिशें नाकाम रहने पर दिव्यांग असीम ने अपने घर से राज्य सचिवालय तक विरोध मार्च शुरू किया। **प्रधानमंत्री मोदी को जब इस बारे में पता चला तो उन्होंने तत्काल पीएमओ से इस पर मदद के लिए कहा। असीम के परिवार वाले इससे काफी खुश हैं।**

60 साल के दिव्यांगने कबाड़ से बनाई e-Bike

कुछ नया करने का जज्बा इंसान में गजब की ऊर्जा भर देता है। 60 साल के विष्णु पटेल के साथ भी कुछ ऐसा ही है। वह दिव्यांग हैं। बचपन में ही उन्हें पोलियो हो गया था। ठीक से चल नहीं पाते हैं। सुनने में भी दिक्कत होती है। लेकिन गुजरात के सूरत में जिंदगी बसर कर रहे विष्णु पटेल ने वह कर दिखाया है, जिसके बारे में हम-आप सोच भी नहीं पाते हैं। उन्हें ई-कचरे यानी मोटरसाइकल के कचरे, लैपटॉप-स्मार्टफोन की बैट्री और ऐसे ही फेंकी गई चीजों को जोड़कर ई-बाइक बना ली है।

छोटा सा कमरा है इनका वर्कशॉप

विष्णु पटेल के बेटे निखिल पटेल अपने पिता के इस इनोवेशन पर गर्व करते हैं। वह कहते हैं, मेरे पिता ने कभी कोई प्रोफेशनल ट्रेनिंग नहीं ली। बचपन से ही पोलियोग्रस्त हैं। दादाजी ने इलाज करवाने की खूब कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। वह बहुत ज्यादा पढ़-लिख नहीं पाए। बीते कुछ वर्षों से उन्हें सुनने में भी दिक्कत होती है। एक छोटा सा कमरा उनका वर्कशॉप है, जहां वह कुछ ना कुछ करते रहते हैं।

बेटे का बिजनेस, पिता के इनोवेशंस

सूरत का यह पटेल परिवार का कॉपर वायर ड्राइंग डाईज का बिजनेस करता है। इस व्यवसाय को विष्णु पटेल ने ही शुरू किया था। जबकि बेटा निखिल इसे संभाल रहा है। इसके अलावा वह कारखानों, घरों में पीने का पानी पहुंचाने का भी काम करते हैं। यह काम मूल रूप से निखिल के छोटे भाई संभालते हैं। लेकिन पिता ने छोटे-छोटे इनोवेशन ने इसमें बहुत मदद की है।

जुगाड़ देख आया आइडिया

द बेटर इंडिया से बातचीत में निखिल बताते हैं, साल पहले की बात है। पापा यूपी के मथुरा गए थे। वहां उन्होंने देसी जुगाड़ वाली एक गाड़ी देखी। इसमें एक बाइक के पिछले हिस्से में पिक-अप ट्रक जैसा कुछ जोड़ दिया गया था। वहीं से पिताजी के दिमाग में भी कुछ ऐसा ही करने का ख्याल आया। वह चाहते थे कि हमारे बिजनेस में ट्रांसपोर्टेशन का खर्च कम हो। विष्णु पटेल ने महज 5वीं तक की पढ़ाई की है। लेकिन मैकेनिकल कामों में बचपन से ही उनकी दिलचस्पी रही है।

बना चुके हैं कई छोटी-बड़ी मशीनें

अपने 60 वर्षों के जीवन में विष्णु पटेल कई तरह के काम कर चुके हैं। बहुत पहले उन्होंने लोगों को सिनेमा दिखाने के लिए अपना छोटा-सा मूवी थिएटर शुरू किया था। जबकि कई वर्षों तक उन्होंने हीरों के धंधे में भी किस्मत आजमाई। निखिल बताते हैं कि उनकी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में जो भी मशीन लगीं हैं, उनमें से बहुत सी मशीने खुद विष्णु पटेल ने बनाई हैं। वह किसी भी इलेक्ट्रॉनिक और मैकेनिकल कचरे को फेंकते नहीं हैं। संभाल कर रखते हैं।

6 महीनों की मेहनत

निखिल बताते हैं, हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम पिताजी के लिए वर्कशॉप बनवाए। लिहाजा, पापा ने एक कमरे को ही अपना वर्कशॉप बना लिया है। वह कबाड़ वालों की दुकान से पुरानी मोटरसाइकल के पार्ट्स, लैपटॉप, मोबाइल आदि की पुरानी बैटरी जैसी चीजें खरीदकर लाने लगे। करीब 6 महीने तक वह घंटों कमरे में कुछ ना कुछ करते रहते। फिर एक दिन उन्होंने हमें यह ई-बाइक दिखाई।

अब सौर ऊर्जा पर करना चाहते हैं काम

विष्णु पटेल ने ई-बाइक के अलावा दिव्यांग लोगों के लिए एक इनोवेटिव व्हीकल भी बनाया है। वह ऐसी और भी ई-बाइक्स बनाना चाहते हैं। लेकिन फंड की समस्या है। आगे उनकी योजना इस तरह की बाइक को सौर ऊर्जा से जोड़ने की है। हालांकि, इसके लिए पैसों का इंतजाम उनके लिए सबसे बड़ी समस्या है।

दिव्यांगों के लिए देश का पहला न्यूज चैनल शुरू, इसमें एंकर से गेस्ट तक सभी दिव्यांग होंगे

दिव्यांगों के लिए देश का पहला दिव्यांग न्यूज चैनल सोमवार को सूरत में शुरू किया गया। दक्षिण गुजरात में इसका प्रसारण शुरू हो गया है। उम्मीद है जल्द ही इसे पूरे देश में देखा जा सकता है। इसे डिसेबल वेल्फेयर ट्रस्ट ने शुरू किया है। इसका उद्घाटन राज्य के राज्यपाल ओपी कोहली ने किया। चैनल के संचालक कनु टेलर ने कहा कि आने वाले दिनों में इस चैनल के लिए इंटरव्यू लेने से लेकर एंकरिंग करने तक सभी काम दिव्यांग ही करेंगे। जल्द ही उनके लिए ट्रेनिंग शुरू की जाएगी। इसमें करीब 6 महीने लग सकते हैं। उसके बाद यह दिव्यांगों के लिए दिव्यांग द्वारा चलने वाला चैनल बन जाएगा।

दिव्यांगों से जुड़ी जानकारी दी जाएगी

चैनल में इंटरव्यू, दिव्यांगों के लिए चलने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी, धार्मिक और सामाजिक खबरों के अलावा अन्य किसी विषय का प्रसारण नहीं किया जाएगा। इससे दिव्यांगों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। गुजरात के राज्यपाल ओपी कोहली ने इस मौके पर कहा कि केंद्र और राज्य सरकार की कई योजनाएं दिव्यांग और समाज तक आसानी से पहुंचाने में यह चैनल अहम भूमिका निभाएगा। दिव्यांगों के कल्याण के लिए कई संस्थाएं और एनजीओ काम कर रहे हैं। यह चैनल उनके काम को भी दिखाए।

गिनीज बुक में दर्ज कराने को भेजा आवेदन

कनु टेलर ने बताया कि दिव्यांगों को प्रेरणा देने के लिए सिर्फ पॉजिटिव चीजें ही दिखाई जाएंगी। दिव्यांग चैनल की प्रोग्राम डायरेक्टर नितल शाह ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में चैनल का नाम दर्ज कराने के लिए आवेदन भेजा है।

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड

8 घंटे में 260 दिव्यांगजनों को आधुनिक कृत्रिम अंग (पैर) लगाए

भरूच. दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग ने गुजरात के भरूच में 7वां गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।

केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत ने आज यहां "दीनदयाल दिव्यांग पुनर्वास योजना (डीडीआरएस)" पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने मुख्य संबोधन में विस्तार से योजना के बारे में जानकारी दी। सम्मेलन का आयोजन सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडबल्यूडी), ने किया गया था। सम्मेलन में सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री श्री रामदास अठावले, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग में सचिव श्रीमती शकुंतला डोले गैमलिन, मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और देशभर के लगभग 600 प्रतिनिधि शामिल हुए।

सम्मेलन का उद्देश्य योजना के हितधारकों अर्थात् कार्यक्रम कार्यान्वयन एजेंसियों (पीआईए), जिला स्तर और राज्य सरकार के अधिकारियों को संवेदनशील बनाना है। इससे पहले दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग ने देश के दक्षिणी, पश्चिमी, मध्य, पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों को कवर करते हुए तीन क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए थे। 22.12.2018 को सिकंदराबाद में, 17.01.2019 को मुंबई में और 18.02.2019 को कोलकाता में सम्मेलन का आयोजन किया था।

उद्घाटन भाषण में श्री गहलोत ने कहा कि "दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा भरूच, गुजरात में आठ घंटे में 260 दिव्यांगजनों को आधुनिक कृत्रिम अंग (पैर) लगाकर 7वां गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड" कायम किया गया। विभाग ने पहले ही अन्य श्रेणियों में छह विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं। यह विभाग के साथ ही हमारे देश के सभी दिव्यांगजनों के लिए अत्यंत गर्व का क्षण है।

उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के तहत भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) ने हाल ही में एक निदेशिका तैयार की है, जिसमें श्रवण बाधित दिव्यांगजनों के लिए 6000 शब्द हैं और 1700 से अधिक श्रवण बाधित बच्चों का कॉक्लियर इंप्लांट सर्जरी से इलाज किया गया है और उनमें से लगभग सभी अब सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। विभाग ने देशभर के दिव्यांगजनों के सुगम आवगमन के लिए उन्हें 'मोटर वाली ट्राइसाइकिल' प्रदान भी की और परिवहन विभाग उनकी मदद कर रहा है। उन्होंने घोषणा की कि अब तक 28 राज्यों ने लगभग 13 लाख दिव्यांगजनों को 'यूनिवर्सल आईडी कार्ड' प्रदान किए हैं और बहुत जल्द यह देश के सभी दिव्यांगजनों को प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने देश के दिव्यांगजनों और वंचित लोगों की बेहतरी और कल्याण के लिए विभाग तथा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा की गई कई नई पहलों और उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी दी।